तू मैं एक रक्त

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

केंद्रीय कार्यकारी मंडलकी बैठक दिनांक 31 दिसम्बर, 2021

विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव क्रमांक06: <u>भारत सरकार का 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस मनाने का अभिनंदनीय निर्णय</u>

भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्रीय मंत्रीमण्डल ने दिनांक 10 नवंबर 2021 को भगवान बिरसा मुंडा के जन्म दिवस 15 नवंबर ज नजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया । अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल इस निर्णय का स्वागत करता है । यह निर्णय समस्त जनजातीय समाज के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को मान्यता देता है । देश की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है । स्वतंत्रता आंदोलन में जनजातीय समाज की गौरवमयी भूमिका के सम्मान में सम्पूर्ण देश ने 15 से 22 नवंबर तक जनजातीय गौरव सप्ताह अभूतपूर्व उत्साह और उमंग के साथ मनाया ।

भगवान बिरसा का जन्म 15 नवंबर 1875 कोवर्तमान झारखंड के खूंटी जिले के उलीहातू गाँव में हुआ था । बिरसा मुंडा को आमजनों ने उनके जीवन काल में ही धरती का आबा अर्थात भगवान के रूप में अपनाया और पूजा । भगवान बिरसा मुंडा एक हुतात्मा, महान समाज सुधारक के साथ साथ ब्रिटिश सरकार के अन्यायों तथा शोषणकारी नीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी थे । अन्याय और शोषण के विरुद्ध उन्होंने जन आंदोलन का नेतृत्व किया जो स्थानीय समाज को कष्टों से मुक्ति तथा न्याय दिलाने के लिए लक्षित था। उनका यह संघर्ष परंपरागत व्यवस्था पर होने वाले हमलों का प्रतिकार था । यह सामाजिक-धार्मिक आंदोलन जनजातीय समाज की नई व्यवस्था को स्थापित करने की इच्छा का प्रकटीकरण था ।

दिव्य व्यक्तित्व जाति, पंथ, और क्षेत्र की संकुचित सीमाओं में नहीं बांधे जा सकते । वे समाज और देश में विद्यमान परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में अपनी अन्तरात्मा की आवाज को सुनते हैं और अपने जीवन उद्देश्य को पूरा करते है । उनके कर्म और विचार आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरक बन जाते है ।

अंग्रेज शासकों ने जनजातीय बहुल क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों को धर्म प्रचार की अनुमति दी । जिससे जनजातीय क्षेत्र सहित सम्पूर्ण भारत में ब्रिटिश राज्य सदैव स्थापित रह सके । ईसाई मिशनरियों के धर्म प्रचार से जनजातीय समाज की आस्थाओं को गहरा आघात लग रहा था। अंग्रेजों तथा मिशनरियों की इस मिलीभगत को बिरसा मुंडा ने अच्छी तरह से समझ लिया था

तथा वे सदैव कहते थे “साहब साहब एक टोपी” । भगवान बिरसा मुंडा का लक्ष्य पूर्ण रूप से धार्मिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रता था । यह भगवान बिरसा के आंदोलन का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसे सही परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है । इसी ने उन्हें भगवान की उपाधि से विभूषित किया । भगवान बिरसा का स्वप्न वस्तुत: ब्रिटिश राज, यूरोपीय मिशनरी और अंग्रेज प्रशासन के पूर्ण उन्मूलन का था जिन्होंने प्राचीन परंपराओं और जनजातीय रीति-रिवाजों को मनमाने ढंग से अपमानित किया था । व्यापक संदर्भों में भगवान बिरसा मुंडा का आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन का ही एक हिस्सा था ।

आजादी का अमृत महोत्सव इस बात के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अवसर है जिसमें न केवल भगवान बिरसा मुंडा के स्वाधीनता संघर्ष को बल्कि समूचे जनजाति समाज का इसमें जो योगदान था उसे भी लोगों के सामने रखा जाए। इसलिए अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम एक बार पुनः भारत की केंद्र सरकार का अभिनंदन करता है और 15 नवंबर को प्रत्येक वर्ष जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाए जाने के निर्णय का स्वागत करता है। 15 नवंबर को जनजाति गौरव दिवस घोषित करके भारत सरकार नेतिलकामांझी , तलक्कल चंदू , टंट्या भील,सिदो-कान्हू, निलांबर-पीतांबर,भागोजी नाईक, कुमराम भीम, रामजी गोंड, शम्भोधन फुंगलो, हाइपो जादोनांग, रानी मां गाईडिन्ल्यू, उ तिरोत सिंह, मिजो रानी रोपुयील्यानी और अन्य अनेक सेनानी जिन्होंने लाखों स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया था, इन सब का उचित सम्मान किया है । इन सब वीर गाथाओं को लिपिबद्ध करने से हमें इस गौरवमय और देदीप्यमान स्वर्णिम इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी ।

भारतीय संस्कृतिको अरण्य संस्कृति कहा जाता है । जिसका अर्थ है वनों में जन्मी संस्कृति । यही जनजाति समाज की भी संस्कृति है। जब हम जनजाति गौरव की बात करते हैं तो यह केवल शहीदों तक सीमित नहीं है। हमें अपने जनजाति समाज केअध्यात्म , पूजा-पद्धति, वेशभूषा, रीति-रिवाज, परंपरा, सामाजिक और सामुदायिक जीवन-पद्धति, जीवन मूल्य, प्रकृति माता के संरक्षण और संवर्धन पर केंद्रित जीवन दर्शन, लोक गीत, नृत्य, संगीत, कला, हस्तशिल्प, भाषा, बोली, लिपि आदि जो मानव जीवन के हर पहलू को स्पर्श करता है , इन सभी पर गौरवान्वित होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए ।

अ. भा. व. कल्याण आश्रम इस दिन को जनजातिय गौरव दिवस के रूप में विगत अनेक वर्षों से मना रहा है। अब यह आधिकारिक हो गया है। अ.भा.व.कल्याण आश्रम का केन्द्रीय कार्यकारी मंडल समाज के सभी वर्गों से प्रत्येक वर्ष 15 नवंबर को जनजाति गौरव दिवस के रूप में पूरे हर्षोल्लास और गर्व की अनुभूति के साथ मनाने का आह्वान करता है । जनजाति समाज का गौरवमयी योगदान न केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकीकरण में बल्कि हमारे राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं में भी है।